# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 01 अप्रैल-I-2022 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50


### दिव्यता दिवस के रूप में मनाई दादी हृदयमोहिनी की प्रथम पुण्य तिथि

# 'अव्यक्त लोक' का लोकार्पण

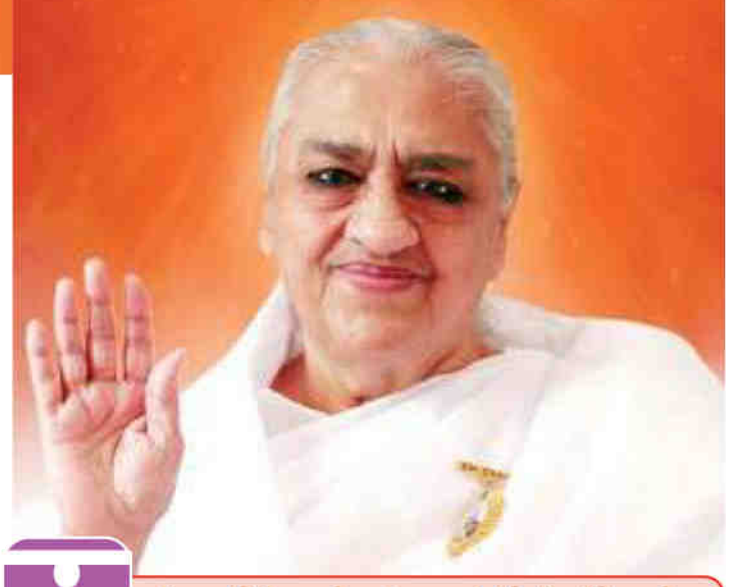

**शांतिवन-आबू रोड।** ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी पिछले 11 मार्च 2021 को अपने देह का त्याग कर अव्यक्त वतन वासी बनीं। उनके प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर शांतिवन, डायमण्ड हॉल के पास उनकी स्मृति में बने 'अव्यक्त लोक' का लोकार्पण 11 मार्च 2022 को किया गया। इस मौके पर विभिन्न देशों सहित भारत के हरेक प्रांत से करीब पंद्रह हज़ार लोग दादी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने पहुँचे। दादी जी के प्रथम पुण्य स्मृति दिन पर संस्थान के वरिष्ठ भाई-बहनों ने विशाल डायमण्ड सभागार में दादी के साथ की स्मृतियों को सभी के साथ साझा किया। दादी जी की डिवाइन लाइफ आज भी सभी के मन-मस्तिष्क पर तरोताज़ा है, जो भूले नहीं भुलाई जा सकती। इस अवसर पर विशेष त्रिदिवसीय सामूहिक राजयोग मेडिटेशन का भी आयोजन किया गया और देश-विदेश में फैले इस संस्थान के हरेक सेवाकेन्द्र में भी 'डिवाइन लाइफ' के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित किये गये।

**अव्यक्त लोक के केन्द्र में दिव्य अलौकिक आभा को बिखेरती मणि, आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत, जो सम्पूर्ण विश्व में आध्यात्मिक ऊर्जा निरंतर प्रवाहित कर रही है। दिन के समय में जहाँ यह अव्यक्त लोक सूक्ष्म वतन की भांति श्वेत, शांत, शीतलता बिखेरता हुआ नज़र आता, वहीं ब्रह्ममुहूर्त के समय में, लाल प्रकाश में वह परमधाम की अनुभूति कराता है। जैसे सभी ब्रह्मावत्स दादी जी के माध्यम से प्रभु मिलन मनाते रहे हैं, उसी तरह आने वाले समय में दादी जी के इस यादगार के द्वारा परमात्म मिलन का अनुभव करते रहेंगे।**

11 मार्च 2021 को ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी का मुम्बई के सैफी हॉस्पिटल में देवलोकागमन हो गया था। आप 93 वर्ष की थीं और मात्र 9 वर्ष की आयु में ही संस्थान से जुड़ गईं। आपको बचपन से ही परमात्मा शिव द्वारा दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त था। वर्ष 1969 में संस्थान के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद आपने अपनी दिव्य दृष्टि की शक्ति से लाखों भाई-बहनों को परमात्म संदेश सुनाकर संदेशवाहक की भूमिका निभाई। आपको सभी प्यार से दादी गुलज़ार भी कहते। दादी की योग-तपस्या का ही कमाल था कि आपके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आपसे दिव्य-अलौकिक अनुभूति होती। आपका दिव्य और तेजस्वी चेहरा रूहानियत से भरपूर था। आप सरल, निश्छल और मृदुभाषी थीं। आपके सानिध्य में आने वाले अनेकों को रूहानियत का अनुभव होता। आपके सामने कोई भी अपनी समस्या लेकर आता तो आप दो शब्दों में ही उसकी समस्या का समाधान कर उसे निश्चिंत कर देतीं। दादी जी अक्सर योग-तपस्या और साइलेंस की गहन शांति की अनुभूति में रहतीं। ऐसी महान दादी की प्रथम पुण्य तिथि पर आपको हृदय की गहराइयों से श्रद्धा सुमन अर्पित।

## टावर ऑफ डिविनिटी

'अव्यक्त लोक' 5000 वर्गफीट क्षेत्रफल में बना है। दिव्य स्तम्भ की संचरना 3000 वर्ग फीट में की गई है। दादी जी के चरित्रों को दर्शाते हुए 22 स्तम्भों के निचले हिस्से में पवित्रता के सूचक मयूर (मोर) की आकृति बनाई गई है। स्तम्भों के ऊपर सुन्दर कमान है जो कवच की भांति 'अव्यक्त लोक' के चारो ओर सुशोभित है। इसमें प्रयुक्त 'ब्राज़ीलियन मार्बल' पचास डिग्री सेल्सियस गर्मी में भी शीतल रहता है। विशिष्ट राजस्थानी कारीगरों के द्वारा अनेकों कलाकृतियों से इस स्मारक को तराशा गया है। 100 से भी अधिक कुशल कारीगरों व ब्रह्मावत्सों के अथक प्रयासों से लगभग दस माह के भीतर यह भव्य स्मारक 'अव्यक्त लोक' साकार हुआ। विश्व के चारो दिशाओं की सेवा करने के यादगार स्वरूप 'अव्यक्त लोक' की छत में चारो दिशाओं में चार गुम्बज बनाये गये हैं एवं इसी के मध्य में 'टावर ऑफ डिविनिटी' दिव्य स्तम्भ बनाया गया है, जिसके चारो तरफ 'डिग्निटी, डेडिकेशन, डिटैचमेंट और डिविनिटी' उल्लिखित है जो दादी हृदयमोहिनी के जीवन के आधार स्तम्भ रहे। ये आज भी अनेकानेक आत्माओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं और सदा बना रहेंगे।

## दादी जी के जीवन से मुख्य शिक्षायें

दादी हृदयमोहिनी का व्यक्तित्व ऐसा था मानो वे किसी अलौकिक दुनिया में ही रहती हों, ऐसी सभी को अनुभूति होती थी। दादी की डिवाइन पर्सनैलिटी सभी के हृदय को स्पर्श करने वाली थी। वे तमोगुणी दुनियावी वातावरण से बिल्कुल निर्लिप्त थीं। उनकी दृष्टि, कृति निर्मल एवं पवित्र थी।

**दादी जी के दिव्य व्यक्तित्व में कुछ मुख्य धारणायें थीं जो सबको अनुभव होती थीं, उसी आधार पर मुख्य रूप में चार बातें भी अभिलेखित हैं।**

- **पहला, मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई**
- **दूसरा, सादगी जीवन का सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार है**
- **तीसरा, सदा खुश रहो, खुशियां बांटो, कुछ भी हो जाये खुशी न जाये**
- **चौथा, सम्पूर्ण पवित्रता ही हमारी शक्ति है**